शराफ़त अली ख़ान

ई-मेल-sharafat1988@gmail.com

डस्टबिन

बुढ़ापा क्या इतना दयनीय भी हो सकता है ? वह सोचने लगा। उसने बिस्तर पर से उठने का असफल प्रयास किया। किंतु उठने की उसकी सारी शक्ति व्यर्थ गई। वह कमर तक उठा, फिर लेट गया। ये बुढ़ापा भी क्या कमीनी चीज है? वह ये सोचकर इस कठिन समय में भी मुस्कुरा पड़ा । वह लेटे-लेटे सोचने लगा। वक़्त ही दुनिया में सब-कुछ है । एक वक़्त वह था ,जब ट्रेनिंग के दौरान वह 25 किलोमीटर की तेज चाल से चलकर फिजिकल टेस्ट में पास हुआ था । ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट में रोज सुबह 3 किलोमीटर की दौड़ में भाग लेता और एक बार तो सारे ट्रेनीज़ को पीछा छोड़ते हुए वह सबसे आगे दौड़ा था। अब क्या हो गया ? मैं तो वही हूँ। मजबूत कद-काठी का, बस उम्र ही तो बढ़ गई है। जब आज से 8 साल पहले मैं रिटायर हुआ तो सभी साथी लोग कहने लगे यार, तू तो अभी 10 साल नौकरी और कर सकता था, क्या हुआ? इतनी जल्दी रिटायरमेंट? मैं हंसकर कहता—यार! सरकार शक्ल नहीं डॉक्यूमेंट्स देखती है, उसे क्या मालूम, मैं अभी भी समर्थ हूँ?

इतने में पत्नी भीगे हुए चार बादाम, दो अंजीर और एक गिलास दूध लेकर आ गई। मैंने उठने का प्रयास किया। इस बार पत्नी ने सहारा देकर बिठाया और बादाम रख चली गई। बोली कुछ नहीं । मुझे मालूम है कि वह मुझसे नाराज़ है। पत्नी को तो हक़ होता है नाराज़ होने का। खासतौर पर बुढ़ापे में । वैसे वह जवानी के दबे हुए बदले भी तो गिन-गिन कर लेना चाहती है। ताने भी देती है । लेकिन मैं चुपचाप रहता हूँ ।इस उम्र में चुप रहने में ही भलाई है। सारा गुस्सा जवानी में निकाल जो चुका हूँ । वह अक्सर बड़बड़ाती रहती है कि सारा दिन लेटे-लेटे किताबों में गुम रहते हैं या कहानियाँ लिखते रहते हैं, वह भी बेसिर-पैर की । अरे सुबह-शाम न सही, कम से कम दिन में तो थोड़ा बाहर जाकर टहला करो। मगर क्या करूं? मुझे टहलने से और घर से बाहर निकलने से एलर्जी हो गई है। सारी जवानी घर से बाहर ही काटी । सुबह होते ही ऑफिस जाने की जल्दी में कभी घर भी ठीक से नहीं देखा। शाम को लोग-बाग घर लौट आते हैं और मैं हमेशा अप-डाउन करने की वजह से रात के दस या ग्यारह बजे से पहले घर नहीं आ पाता और लोग संडे या त्योहार घर पर बनाते हैं। मगर पेड़ कभी अवकाश पर नहीं होते और जंगल कभी त्यौहार नहीं मनाता है। इसलिए उन दिनों और भी ज्यादा गस्त बढ़ जाती, चौकसी ज़्यादा करनी पड़ती। कई –कई दिन घर नहीं आ पाता, जंगल कोठी पर ही रहना पड़ता।

पत्नी के पास शिकायतों की एक पूरी गठरी है और जब वह गठरी खोलकर बैठती है तो मैं जमीन में जैसे गढ़-सा जाता हूँ, क्योंकि इसकी शिकायतें अपनी जगह वाजिब होती हैं। कभी बाहर घूमने नहीं ले गए, कभी दिल से शॉपिंग नहीं करा पाए। कभी बच्चों को नहीं देखा। स्कूल के पेरेंट्स मीटिंग के लिए

टाइम ही नहीं रहा वगैरह-वगैरह।

पत्नी अब झूठे बर्तन उठाने आई तो मैंने उसकी निगाहों में झांका। उसने ताड़ लिया। बोली, "क्यों क्या हुआ?"

"नाराज़ हो?" मैंने सीधे प्रश्न किया।

"नाराज़? नहीं तो, क्यों?" उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

"नहीं, यूं ही, तुम्हारे चेहरे के हाव-भाव से लग रहा था।"

मैंने स्पस्टीकरण देने का प्रयास किया।

पत्नी अब संभल चुकी थी। बोली, "अब नाराज़गी करने से क्या फायदा। नाराज़ होने का समय तो बहुत पहले छूट गया है। अब तक तो मैं नाराज़गी को अतीत के डस्टबिन में डाल चुकी हूँ।"

इतना कहकर पत्नी ने जाते-जाते घूमकर तिरछी नज़र से देखा। उसकी मुस्कराहट से मेरे भीतर बुझे दीप जल से उठे थे।

खोज

सुदूर देश रुस से बेटे की वीडियो कॉल आई। मुझे देखते ही उसने अपने बड़े-बड़े बालों पर हाथ फेरा और मुझे अभिवादन किया ।

मैंने पूछा, " कैसे हो बेटा?"

हस्बेमामूल उसने जवाब दिया, "पापा मैं ठीक हूँ, आपकी तबीयत कैसी है ?"

मैंने भी पुराना वाक्य दोहराया, "फिलहाल तबीयत ठीक चल रही है।"

फिर उसने चहकते हुए कहा, "पापा ! कल फाइनल पेपर खत्म हो गए हैं। अब कुछ दिनों में छुट्टियाँ हो जाएंगी, फिर घर आऊँगा।"

बेटा वहां मेडिकल के चौथे वर्ष में अध्यनरत है ।

मैंने फिर पूछा, "कैसे रहे पेपर?"

"पापा, आप तो जानते ही हैं कि यहां पेपर देने के अगले दिन ही नंबर बता दिए जाते हैं । आज मैंने नंबर देखे। मैं सब में पास हूँ। अब फोर्थ ईयर पूरा हो गया है पापा।"

इतना सुनने के बाद मैं पुराने दिनों में लौट गया। उन दिनों मैं सरकारी कार्यवश बाहर था । बेटा एक स्थानीय इंटरमीडिएट कॉलेज में दसवीं में था और उसका रिजल्ट आने वाला था। एक दिन उसका फोन आया, " पापा, मेरा रिजल्ट आ गया।

"अच्छा , "मैंने पूछा, "क्या रहा?"

"पापा, मैं फेल हो गया।" यह कहकर बेटा खामोश हो गया और मैं... मेरे दिल के भीतर एक हूक-सी पैदा हुई और आंखें आंसू से भर आईं। मुझे लगा, मेरा बेटा नहीं, मैं फेल हो गया हूँ।

चुपचाप मैंने आंसुओं को पोंछा । सहज होने का प्रयत्न किया और कहा, "बेटा, तुम टेंथ में फेल हुए हो, जिंदगी से नहीं । कोई बात नहीं। इस बार मेहनत से पढ़ना।"

बेटे ने वीडियो कॉल पर खामोशी पाकर पूछा , "पापा ! कहां खो गए आप ?"

मेरी आंखें फिर डबडबा आईं। मैंने चेहरा दूसरी तरफ घुमाते हुए कहा, "बेटा, मैं तुम्हारी सफलता में खुद को खोज रहा था।"